Wed. (4)

23/4/2020

— भावार्थ —

(1) पल - पल में .... साहिब सौं पहचान

कवयित्री ललदयद जी का मानना है कि ईश्वर सर्वत्र विदयमान है। कवयित्री ने शिव को ही अपना आराध्य (प्रभु) माना है। मनुष्य को सचेत करते हुए उन्होंने कहा है कि हे मनुष्य। तू धार्मिक आधार पर हिंदू-मुसलमान का त्याग कर उसे अपनाले ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने से पहले तेरे लिए यह आवश्यक है कि तू स्वयं को अर्थात् (अपने) बारे में ज्ञान प्राप्त कर इससे प्रभु से पहचान आसान हो जाएगी। हमारी आत्मा में ईश्वर का ही वास है।

प्रश्न सर्वव्यापी ईश्वर को मनुष्य क्यों नहीं खोज पाता है?

उत्तर सर्वव्यापी ईश्वर को मनुष्य इसलिए नहीं खोज पाता है क्योंकि वह अपने-अपने धर्म-स्थलों पर प्रभु को खोजता फिरता है। इसी अज्ञानता के कारण वह प्रभु की खोज करने में असफल रहता है।

प्रश्न— आत्मज्ञानी ईश्वर को कैसे पा सकता है?

उत्तर— मनुष्य में निहित आत्मा भी तो ईश्वर का ही अंश है यह आत्मज्ञान होने से हम ईश्वर के दर्शन पा सकते हैं। इसके लिए मनुष्य को आत्मज्ञानी बनना होगा।

प्रश्न:- कवयित्री ने 'साहिब से पहचान' किसे बताया है?

उत्तर :- कवयित्री ने 'साहिब से पहचान' आत्मज्ञान को बताया है, जिसकी सहायता से हम ईश्वर की प्राप्ति कर सकते हैं।

प्रश्न कवयित्री ने अपने प्रभु को किस नाम से पुकारा है?

उत्तर- कवयित्री ने अपने प्रभु को 'शिव' के नाम से पुकारा है।

प्रश्न पद्यांश में 'साहिब' किसे कहा गया है?

उत्तर- पद्यांश में कवयित्री ने 'साहिब' शब्द का प्रयोग प्रभु अर्थात् ईश्वर के लिए किया है।

प्रश्न- 'भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां' के माध्यम से कवयित्री ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर 'भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां' के माध्यम से कवयित्री ने मनुष्य को हिंदू-मुसलमान के बीच भेदभाव न करके सभी को एक साथ मिलजुलकर रहने तथा भाईचारे का संदेश दिया है।